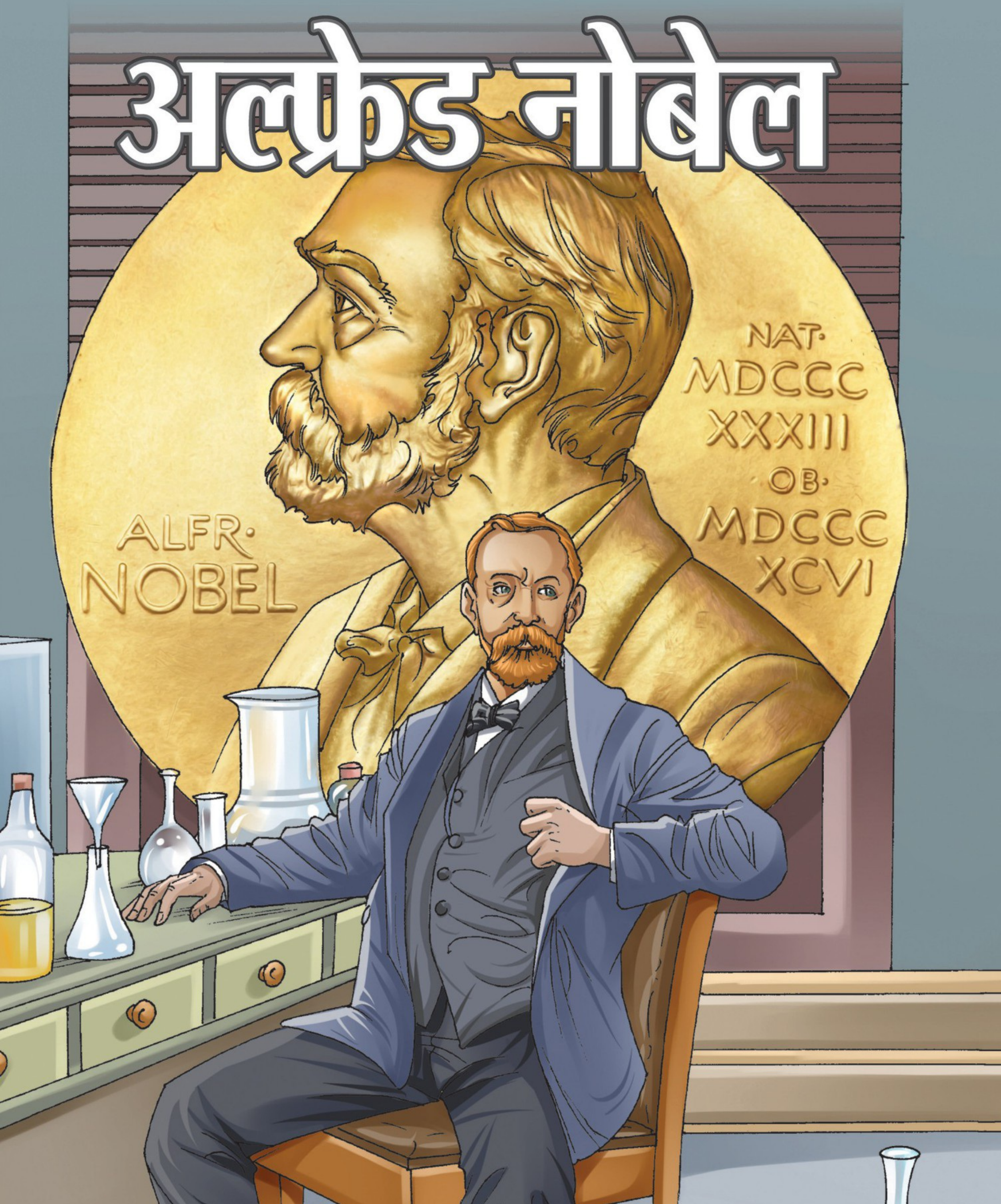
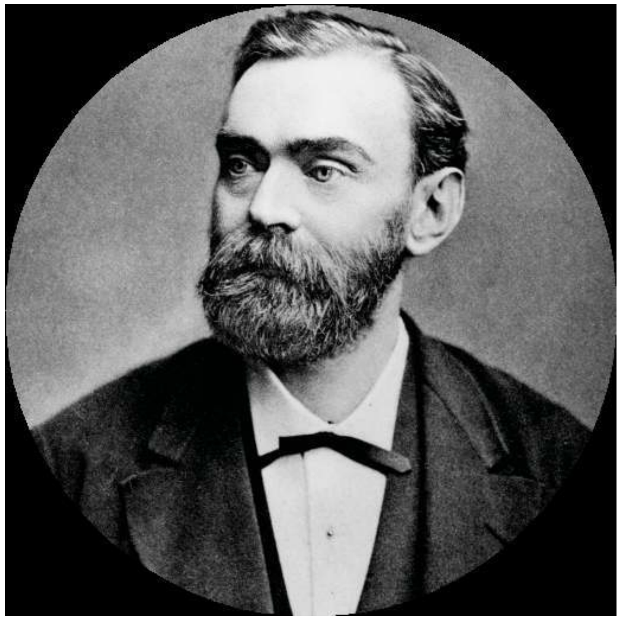
अल्फ्रेड नोबेल



अल्फ्रेड नोबेल

प्रभात प्रकाशन
ISO 9001:2015 प्रकाशक

अल्फ्रेड नोबेल



(21.10.1833— 10.12.1896)

''वकीलों को भी जीवन व्यतीत करने हेतु धन की जरूरत पड़ती है, जिसे वे लोगों को केवल गुमराह करके अर्थात् वक्र रेखा के सीधी होने का विश्वास दिलाकर कमाते हैं।''

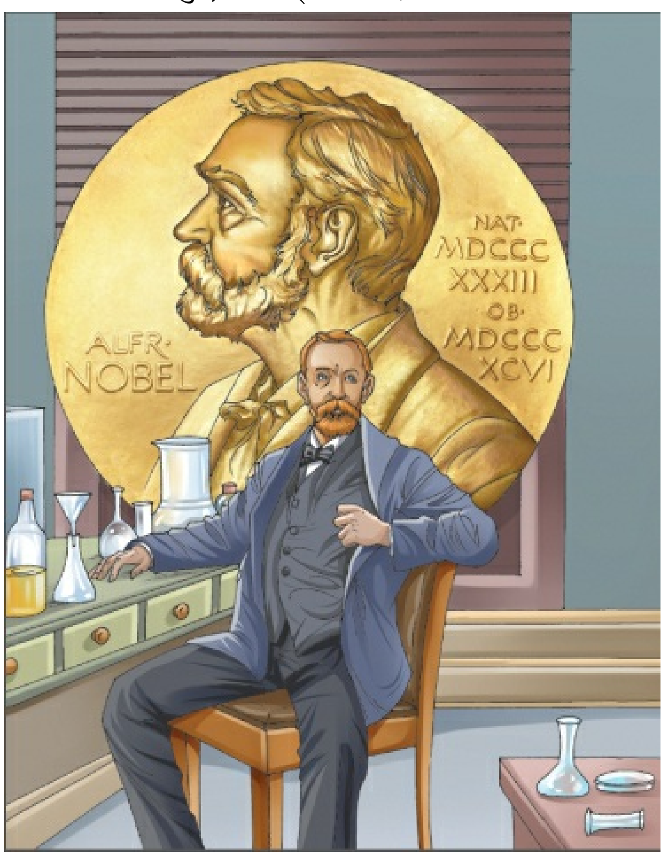
प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार के बारे में प्रत्येक व्यक्ति जानता है। इसकी शुरुआत सन् 1901 में हुई और तब से लेकर आज तक यह प्रति वर्ष रासायनिकी, भौतिकी, शरीरविज्ञान अथवा चिकित्सा, साहित्य एवं शांति के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धियों हेतु दिया जा रहा है। आश्चर्य की बात यह है कि इन पुरस्कारों का सृजन विस्फोटक डायनामाइट के आविष्कारक अल्फ्रेड नोबेल ने किया था, जिनके नाम पर इसका नामकरण नोबेल पुरस्कार के रूप में किया गया।

अल्फ्रेड मानते थे कि डायनामाइट संयोगवश विश्व में शांति स्थापित करने में सहायक होगा; इस तथ्य की पुष्टि उनके द्वारा कथित इन शब्दों से की जा सकती है, मेरी डायनामाइट विश्व के हजारों आविष्कारों की अपेक्षा शीघ्रता से शांति स्थापित करेगी। जितनी जल्दी लोगों को पता चलेगा कि केवल एक झटके में समूची सेना को पूरी तरह नष्ट किया जा सकता है तो निश्चय ही वे स्वर्णिम शांति की ओर प्रवृत्त होंगे। यद्यपि वास्तविक रूप से वैसा नहीं हुआ, क्योंकि हमने परमाणु बम जैसे अनेक विध्वंसक यंत्रों को दुनिया के अनेक भागों को पूर्णरूपेण नष्ट करते देखा है। अंततोगत्वा उनके नोबेल पुरस्कार किसी सीमा तक उन्हें वह सम्मान दिलाने में सहायक सिद्ध नहीं हुए।

स्वीडिश रसायनज्ञ, आविष्कारक, शस्त्रास्त्र निर्माता एवं अभियंता अल्फ्रेड बर्नहार्ड नोबेल का जन्म स्वीडन के स्टाकहोम में 21 अक्तूबर, 1833 को इमैनुएल एवं कैरोलिना एंड्रिएट नोबेल के पुत्र के रूप में हुआ था। उनके पिता व्यावसायिक

रूप से एक आविष्कारक एवं अभियंता (इंजीनियर) थे, जो ह्रश्वलाईवुड का निर्माण करनेवाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने टारपीडो के रूप में ज्ञात समुद्री पनडुब्बी भी बनाई थी। इमैनुएल एवं कैरोलिना के आठ बच्चे हुए, परंतु केवल चारलड़के ही जीवित बचे। अल्फ्रेड उनका चौथा पुत्र था। अनेक जीवनीकारों का दावा है कि अल्फ्रेड स्वीडिश वैज्ञानिक ओलाज रेडबेक का वंशज था, जो मानव शरीर रचनाविज्ञान एवं भाषाविज्ञान के क्षेत्र में अपने योगदान हेतु प्रसिद्ध थे।

अल्फ्रेड के पिता अपने प्रारंभिक वर्षों में एक सफल व्यापारी नहीं थे। वे तभी सफल हुए, जब उन्होंने सन् 1837 में रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में स्वयं को मशीनी औजारों एवं विस्फोटकों के निर्माता के रूप में स्थापित किया। अल्फ्रेड और उसके भाई अपनी माँ के साथ सन् 1842 में सेंट पीटर्सबर्ग स्थानांतरित हो गए। अल्फ्रेड अब निजी शिक्षकों से ट्यूशन की पढ़ाई करने में सक्षम थे। उन्होंने अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी एवं रूसी भाषाओं में निपुणता प्राप्त करने के साथ ही रसायनशास्त्र में भी अच्छा प्रदर्शन किया। स्टाकहोम में रहते हुए, वे सन् 1841 एवं 1842 के दौरान



जैकब अपोलोजिस्टिक स्कूल नामक केवल एक विद्यालय में मात्र अट्ठारह महीने गए थे।

अल्फ्रेड ने बचपन से ही अभियंत्रण, विशेषतया विस्फोटकों के निरूपण में अपनी रुचि दिखानी शुरू कर दी थी। इस उद्देश्य हेतु वे रसायनशास्त्री निकोलाई

जिनिन के पास अपना अध्ययन जारी रखने हेतु पेरिस गए। सन् 1850 में अट्ठारह वर्ष की आयु में रसायनशास्त्र की शिक्षा लेने हेतु चार वर्षों के लिए अमेरिका गए। उसी दौरान उन्होंने कुछ समय के लिए आविष्कारक एवं अमेरिकी युद्धपोत यू.एस.एस. मॉनीटर, जिसे अमेरिकी गृह युद्ध (1861-65) में प्रयोग किया गया था, के पहले डिजाइनर जॉन एरिक्षन के अधीन काम किया।

अल्फ्रेड द्वारा गैस मीटर के लिए पहला पेटेंट प्राप्त करने का आवेदन सन् 1857 में किया गया। उसके बाद अल्फ्रेड शस्त्रास्त्र उद्योग में लिप्त हो गए, क्योंकि उनके पिता का विस्फोटक बनाने का कारखाना था।

सन् 1853 में क्रीमियाई युद्ध प्रारंभ होने के बाद नोबेल के कारखाने ने ढेर सारे शस्त्रास्त्र निर्मित किए, परंतु तीन वर्ष बाद जब युद्ध समाप्त हो गया तो उनके कारोबार में गिरावट आनेलगी और उन्हें खुद को दिवालिया घोषित करना पड़ा।

वर्ष 1859 में अल्फ्रेड के पिता ने अपने पारिवारिक कारोबार से अवकाश ग्रहण कर लिया और उनका स्थान उनके दूसरे पुत्र लुडविग नोबेल ने ले लिया। उनके अधीन कारखाना खूब फूला-फला और नोबेल परिवार एक बार फिर अपनी आर्थिक समस्याओं का ध्यान रखने में सक्षम हो गया।



इस बीच अल्फ्रेड वापस चले गए और वहाँ विस्फोटक बनाने में काम आनेवाली प्रक्रिया के अध्ययन में लिप्त हो गए। वह मूलत: नाइट्रोग्लीसरिन के सुरक्षित उत्पादन की विधि खोजने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि वह अत्यंत

ज्वलनशील पदार्थ था।
नाइट्रोग्लीसरिन एक ऐसा विस्फोटक था, जिसे अस्सानियो सोब्रेरो द्वारा सन् 1847 में खोजा गया था। वह एक भारी विस्फोटक द्रव था, जो रंगहीन एवं तैलीय प्रकृतिवाला था। अधिकतर उसका निर्माण तेज गंधवाले नाइट्रिक एसिड के मिश्रण से किया जाता था।
सन् 1863 में अल्फ्रेड ने विस्फोटकों को उड़ाने में काम आनेवाले डेटोनेटर का आविष्कार किया। दो वर्ष बाद उन्होंने ब्लास्टिंग कैप का डिजाइन तैयार किया, जो एक प्रकार का डेटोनेटर ही था।
अल्फ्रेड एक अभिप्रेरित एवं अपने कॅरियर के प्रति सचेत व्यक्ति थे। 3 सितंबर, 1864 को एक शेड में हुई दुर्घटना के परिणामस्वरूप उनके छोटे भाई एमिल की मृत्यु होने के बाद भी वे विचलित नहीं हुए। वे उस समय हेलेनबर्ग, स्टाकहोम के कारखाने में नाइट्रोग्लीसरिन तैयार कर रहे थे, जिसमें विस्फोट हो जाने के कारण चार अन्य लोगों की भी मृत्यु हो गई थी। इस दुर्घटना ने यदि अल्फ्रेड को कुछ सिखाया तो वह था— कम विनाशकारी विस्फोटकों का परीक्षण एवं निर्माण।
दुर्घटना के तीन वर्ष बाद, सन् 1867 में अल्फ्रेड नोबेल ने डायनामाइट की



खोज की, जिसके लिए उन्हें आज भी याद किया जाता है। परीक्षण करने के बाद अल्फ्रेड ने पाया कि यदि नाइट्रोग्लीसरिन में कैसेलगर नामक गतिहीन तत्त्व मिलाया जाए तो वह अधिक स्थिर एवं उपयोग करने में सुरक्षित हो जाता है। कैसेलगर को डायटोमेसियस अर्थ (तलहटीवाली काली मिट्टी) भी कहते हैं, जिसे बिना किसी कठिनाई के तोड़कर उसका पाउडर बनाया जा सकता है और जो द्रवों में सरलता से घुल सकता है।

यूनानी भाषा में डायनामाइट का अर्थ पाउडर है, डायनामाइट से पूर्व वह इसे नोबेल सेफ्टी पाउडर के नाम से पुकारना चाहते थे। यह विस्फोटक नाइट्रोग्लीसरिन की अपेक्षा अधिक स्थिर था और उसे कहीं भी ले जाना सरल था। अमेरिका और इंग्लैंड में खदानों में विस्फोट करने एवं परिवहन प्रणाली के निर्माण हेतु बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाना प्रारंभ हो गया। अल्फ्रेड ने दोनों देशों में इसका पेटेंट प्राप्त कर लिया।

सन् 1873 में अल्फ्रेड पेरिस चले गए, जो सन् 1891 तक उनका स्थायी निवास बना रहा, फिर भी इस दौरान उन्होंने यूरोपीय देशों एवं अमेरिका की यात्राएँ जारी रखीं, क्योंकि वहाँ उन्होंने अपनी कुछ कंपनियों स्थापित की थीं।

अल्फ्रेड का अगला बड़ा उत्पाद जेलिग्नाइट था, जो सन् 1875 में बनाया गया। यह डायनामाइट से अधिक स्थिर एवं कारगर था, परंतु अल्फ्रेड यहीं नहीं रुके। सन् 1887 में उन्होंने बैलिस्टिटाइट नामक एक अन्य विस्फोटक का पेटेंट लिया। यह एक धूम्रहीन प्रणोदक है और इसे दो अत्यंत ज्वलनशील



पदार्थों— नाइट्रोग्लीसरिन एवं नाइट्रोसेल्युलोज को मिलाकर बनाया गया। सन् 1884 में अल्फ्रेड स्वीडिश शाही विज्ञान अकादमी के सदस्य चुने गए और वर्ष 1893 में उपसला विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि से अलंकृत किया।

अल्फ्रेड अब तक अपने सभी आविष्कारों, लगभग 350 पेटेंटों एवं कैस्पियन सागर के साथ लगे तेल के कुओं में निवेश के बल पर अत्यंत अमीर बन चुके थे। उन्होंने दुनिया भर में अनेक शस्त्रास्त्र कारखाने भी स्थापित किए।

इस प्रकार यह विश्वास कर पाना कठिन है कि यह पुरस्कार केवल उन्हीं लोगों को तब दिया जाता है, जब उन्होंने विश्व में शांति स्थापित करने में कोई योगदान किया हो, परंतु इसके पीछे एक कारण है। माना जाता है कि अल्फ्रेड ने नोबेल पुरस्कार में शांति के क्षेत्र को अपनी पूर्व सचिव एवं प्रेमिका बेरथा किंस्की से प्रभावित होकर जोड़ा। किंस्की को भी यह पुरस्कार सन् 1905 में दिया गया था।

अल्फ्रेड के निजी जीवन के विषय में इस तथ्य के अलावा कुछ अधिक ज्ञात नहीं है कि उन्होंने कभी विवाह नहीं किया और न ही उनकी कोई संतान थी। हालाँकि अल्फ्रेड को तीन बार प्यार हुआ; पहली बार जब वह रूस में थे तो

अलेक्सांद्रा नामकलड़की के सामने प्रस्ताव रखा, जिसने दुर्भाग्यवश उन्हें अस्वीकार कर दिया। दूसरी बार अल्फ्रेड लगभग 1876 में प्यार में तब पड़े, जब बेरथा किंस्की उनकी सेक्रेटरी बनी। कुछ समय बाद वह उन्हें छोड़कर अपने पूर्व प्रेमी के पास लौट गई और उसी से विवाह कर लिया।

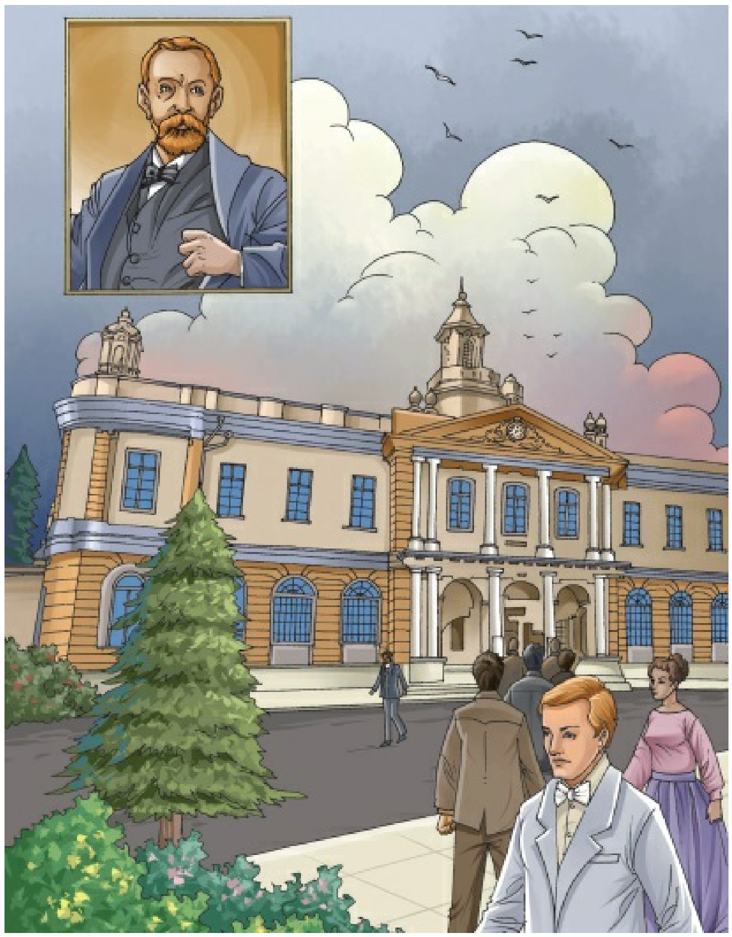


अल्फ्रेड का सबसे लंबा और एकमात्र समुचित संबंध तब बना, जब वे पेरिस में थे। सन् 1876 में उनकी मुलाकात सोफी हेस से हुई। उनका प्रेम संबंध अट्ठारह वर्षों तक चला और यह भी कहा जाता है कि उस रिश्ते का अंत तब हुआ, जब सोफी किसी अन्य व्यक्ति से गर्भवती हो गई।

सन् 1891 में अल्फ्रेड अपनी माँ एवं बड़े भाई लुडविग की मृत्यु के बाद इटली के सान रेमो में शिफ्ट हो गए। कुछ दिनों तक कंठ शूल (एंजाइना) से पीड़ित रहने के बाद उन्हें ब्रेन हैमरेज हो गया, जिसके कारण 10 दिसंबर, 1896 को अपने घर में अल्फ्रेड की मृत्यु हो गई। सर्वाधिक दुःखद तथ्य यह है कि मृत्यु के समय उनकी आयु मात्र तिरसठ वर्ष थी। उन्हें स्टाकहोम के उत्तरी कब्रिस्तान अथवा नोर्रा बिग्राविंग्सहश्वलास्टेन में दफनाया गया।

अपने जीवन के उत्तरार्ध में अल्फ्रेड ने नेमेसिस नामक नाटक लिखने का प्रयास किया, जो उनकी मृत्यु के कुछ ही पूर्व प्रकाशित हुआ था। वह बीट्रिस सेंसी नामक इतालवी महिला, जिसके ऊपर सन् 1590 के उत्तरार्ध में हत्या के एक मामले

में मुकदमा चलाया गया था, के जीवन पर लिखा गया एक चतुरांकी नाटक था। अल्फ्रेड को यह नाटक लिखने की प्रेरणा पर्सी बाइशे शैली द्वारा लिखित दि सेंसी पढ़ने के बाद मिली थी। बीट्रिस सेंसी की कहानी अत्यंत मर्मस्पर्शी है। उसमें बताया गया है कि कैसे उसने और उसके बच्चों ने अपनी माँ के साथ मिलकर उनके पिता की हत्या कर दी थी, जो उन्हें मारता-पीटता और गालियाँ देता था। यद्यपि अंत में पोप क्लेमेंट अष्टम ने उन सबको उनके कृत्य के पीछे के कारणों को पूरी तरह नजरअंदाज करते हुए मुत्यु दंड दे दिया था।



दुर्भाग्यवश अल्फ्रेड की मृत्यु के बाद उनके नाटक की सभी प्रतियों को घृणास्पद मानकर जला दिया गया। केवल तीन शेष रह गईं, जिनमें से एक का प्रथम संस्करण स्वीडिश एवं एस्पेरैंटो नामक दो भाषाओं में लिखा गया था, जिसका प्रकाशन स्वीडन में सन् 1903 में हुआ। उसके बाद नाटक को फ्रांसीसी, स्लोवेनियाई एवं रूसी भाषाओं में अनूदित किया गया।

कुछ जीवनीकारों का दावा है कि नोबेल प्राइज की स्थापना के पीछे मुख्य कारण अल्फ्रेड की अपनी छवि थी। सन् 1888 में जब उनके बड़े भाई लुडविग की मृत्यु हो गई तो फ्रांस के एक अखबार ने भूलवश अल्फ्रेड नोबेल पर शोक संदेश

प्रकाशित कर दिया। चूँकि अखबार ने उन्हें मौत के सौदागर के रूप में पेश किया था और अखबार के मतानुसार अल्फ्रेड ने अपनी सारी दौलत लोगों को पहले की अपेक्षा अधिक तेजी से मारनेवाले उपाय की खोज करके अर्जित की थी। कहा जाता है कि उसी के बाद अल्फ्रेड ने उन उपायों की खोज प्रारंभ की, जिनके लिए लोग उनकी मृत्यु के बाद उन्हें केवल उनके अच्छे कार्यों के लिए याद करें।

अत: अपनी मृत्यु से एक वर्ष पूर्व अल्फ्रेड ने अपनी वसीयत बदल दी और लगभग अपनी संपूर्ण संपत्ति एक ट्रस्ट के नाम कर दी। उनके निर्देशानुसार सारा धन नोबेल पुरस्कारों के लिए व्यय किया जाना था। इस मामले को लेकर लगभग चार वर्षों तक विवाद रहा, जिनका समाधान सन् 1901 में निकला और उसी वर्ष पहली बार नोबेल पुरस्कार देने की शुरुआत हुई। आज प्रत्येक पुरस्कार हेतु दी जानेवाली राशि लगभग 12 लाख अमेरिकी डालर है।



वर्ष 1968 में अल्फ्रेड नोबेल की स्मृति में वाणिज्यिक क्षेत्र में बैंक ऑफ स्वीडन प्राइज शुरू किया गया। अपनी स्थापना के लंबे समय बाद और यहाँ तक कि आज भी अनेक ऐसे लोग हैं, जो इसे मानक नोबेल पुरस्कार स्वीकार नहीं करते हैं। यह जानकर भी हैरानी होती है कि गणित के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हेतु कोई पुरस्कार नहीं है।

अंत में कोई यही कह सकता है कि अल्फ्रेड नोबेल अंततोगत्वा अपनी छवि

सुधारने में सफल रहे, क्योंकि आज अधिकतर लोग उन्हें ऐसे व्यक्ति के रूप में जानते हैं, जिसने अति प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कारों की स्थापना की। उन्होंने एक बार कहा था, 'यदि मेरे पास एक हजार विचार हों और उसमें से एक भी श्रेष्ठ प्रमाणित हो तो मैं संतुष्ट हूँ।' यह कहावत शायद उनकी उपलब्धियों को सच्चे अर्थों में प्रस्तुत करती है, क्योंकि अंततोगत्वा वह नोबेल पुरस्कार ही था, जो इस मामले में उनका इकलौता मददगार साबित हुआ।

❑❑❑